CBSE Class 12 हिंदी कोर

Sample Paper 08 (2019-20)

Maximum Marks: 80
Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न पत्र में तीन खंड हैं - क, ख, ग।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- दो अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।
- चार अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए।
- पाँच अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 120-150 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (12)**
   महिलाओं की मर्यादा और उनसे दुर्व्यवहार के मामले भी अन्य मामलों की तरह न्यायालयों में ही जाते हैं किंतु पिछले कुछ समय से ऐसे आचरण के लिए स्वयं न्यायपालिका पर उँगली उठाई जा रही है। काफ़ी हद तक यह समस्या न्यायपालिका की नहीं, बल्कि पूरे समाज की कही जा सकती है। जज भी समाज के ही अंग हैं, इसलिए यह समस्या न्यायपालिका में भी दिखाई देती है। हमारे समाज में क़ानून के पालन को लेकर बहुत शिथिलता है और अकसर क़ानून का पालन न करने को सामाजिक हैसियत का मानक मान लिया जाता है। वी.आई.पी. संस्कृति का छद्म सिद्धांत ही यह बना लिया गया है कि उसे सामान्य नियम-क़ानून नहीं पालन करने होते, क्योंकि वह महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है। छोटे शहरों, कस्बों में सरकारी अफ़सरों की हैसियत बहुत बड़ी होती है। और जज भी उन्हीं हैसियत वाले लोगों में शामिल होते हैं। ऐसे में, अगर कुछ जज यह मान लें कि वे तमाम सामाजिक मर्यादाओं से ऊपर हैं, तो यह हो सकता है। माना यह जाना चाहिए कि जितने ज़्यादा ज़िम्मेदार पद पर कोई व्यक्ति है, उस पर क़ानून के पालन की ज़िम्मेदारी भी उतनी ही ज़्यादा है। ख़ास तौर से जिन लोगों पर क़ानून की रक्षा करने और दूसरों से क़ानून का पालन कराने की ज़िम्मेदारी है, उन्हें तो इस मामले में बहुत ज़्यादा सतर्क होना चाहिए लेकिन प्रायः ऐसा होता नहीं है। इस समस्या की ओर कई वरिष्ठ जज और न्यायविद ध्यान दिला चुके हैं कि न्यायपालिका में निचले स्तर पर अच्छे जज नहीं मिलते। इसकी एक बड़ी वजह यह है कि अच्छे न्यायिक शिक्षा संस्थानों से निकले अच्छे छात्र न्यायपालिका में नौकरी करना पसंद नहीं करते, क्योंकि उन्हें कामकाज की परिस्थितियाँ और

आमदनी, दोनों ही आकर्षक नहीं लगतीं। नेशनल लॉ इंस्टिट्यूट को तो बनाया ही इसलिए गया था कि अच्छे स्तर के जज और वकील वहाँ से निकल सकें, लेकिन देखा यह गया है कि वहाँ से निकले ज़्यादातर छात्र कॉर्पोरेट जगत में चले जाते हैं। अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों के छात्र भी बजाय जज बनने के प्रैक्टिस करना पसंद करते हैं। जजों की चुनाव प्रक्रिया में कई ख़ामियाँ हैं जिन्हें दूर किया जाना ज़रूरी है, ताकि हर स्तर पर बेहतर गुणवत्ता के जज मिल सकें।

i. गद्यांश को पढ़कर उचित शीर्षक लिखिए। **(1)**
ii. आजकल न्यायपालिका पर उँगली क्यों उठाई जा रही है? **(1)**
iii. कुछ जज अपने आप को सारी सामाजिक मर्यादाओं से ऊपर क्यों मान लेते हैं? **(2)**
iv. जजों को अधिक सतर्क क्यों होना चाहिए? **(2)**
v. न्यायपालिका में निचले स्तर पर अच्छे जज क्यों नहीं मिलते? **(2)**
vi. नेशनल लॉ इंस्टिट्यूट और अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों के अनेक अच्छे छात्र जज बनना क्यों नहीं चाहते हैं? **(2)**
vii. वी.आई.पी. संस्कृति की धारणा किस प्रकार सामाजिक अराजकता और गैर-बराबरी को बढ़ावा देती है? **(2)**

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (1×4)**

सर। पहचाना मुझे?
बारिश में भीगता आया कोई
कपड़े कीचड़ सने और बालों में पानी।
बैठा। छन-भर सुस्ताया। बोला-नभ की ओर देख-
गंगा मैया पाहुन बनकर आई थीं,
झोंपड़ी में रहकर लौट गई।
नैहर आई बेटी की भाँति
चार दीवारों में कुदकती-फुदकती रहीं
खाली हाथ वापस कैसे जाती!
घरवाली तो बच गई-
दीवारें ढहीं, चूल्हा बुझा, बरतन-भाँडे-
जो भी था सब चला गया।
प्रसाद-रूप में बचा है नैनों में थोड़ा खारा पानी
पत्नी को साथ ले, सर, अब लड़ रहा हूँ
ढही दीवार खड़ी कर रहा हूँ
कादा-कीचड़ निकाल फेंक रहा हूँ।
मेरा हाथ जेब की ओर जाते देख
वह उठा, बोला-"सर, पैसे नहीं चाहिए।
ज़रा अकेलापन महसूस हुआ तो चला आया
घर-गृहस्थी चौपट हो गई पर

रीढ़ की हड्डी मज़बूत है सर!
पीठ पर हाथ की थपकी देकर
आशीर्वाद दीजिए लड़ते रहो।

i. बाढ़ की तुलना मायके आई हुई बेटी से क्यों की गई?
ii. बाढ़ का क्या प्रभाव पड़ा?
iii. 'सर' का हाथ जेब की ओर क्यों गया होगा?
iv. आगंतुक ‘सर' के घर क्यों आया था?

Section B

3. **आज की बचत कल का सुख** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

मेरे सपनों का भारत विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

विज्ञापन की बढ़ती हुई लोकप्रियता विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

4. किसी आपराधिक घटना की अपनी सनसनीखेज़ पड़ताल में कुछ समाचार चैनल जाँच में बाधा डालते हैं और न्यायालयों में मामला पहुँचने से पहले ही आरोपी को अपराधी ठहरा देते हैं। इस प्रवृत्ति पर अपने विचार किसी समाचार-पत्र के संपादक को लिखिए।

OR

आपके विद्यालय में फर्नीचर की आपूर्ति के लिए काष्ठागार आमेर सरणि, जयपुर को आदेश दिया गया था, किंतु उन्होंने संविदा में उल्लिखित समझौते के अनुसार आपूर्ति नहीं की। संस्था के प्रबंधक को पत्र लिखकर उल्लंघनों का बिंदुवार उल्लेख करते हुए प्राचार्य की ओर से शिकायती पत्र लिखिए।

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:

a. विशेषीकृत पत्रकारिता को संक्षेप में समझाइए।

b. स्टिंग ऑपरेशन क्या है?

c. लोकतंत्र में जनसंचार के दो कार्यों का उल्लेख कीजिए।

d. रेडियों की अपेक्षा टी.वी. समाचारों की लोकप्रियता के दो कारण लिखिए।

e. मुद्रित माध्यम की दो विशेषताएँ बताइए।

6. मेक इन इंडिया विषय पर एक आलेख लिखिए।

OR

केदारनाथ में जल प्रलय पर एक फीचर लिखिए।

OR

समाचार का इंट्रो लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

Section C

7. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2x3=6)**

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे -
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है !
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

i. चिड़ियों के परों में चंचलता कैसे भर जाती है?
ii. 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !' की आवृत्ति से कविता में क्या प्रभाव उत्पन्न हो रहा है?
iii. कवि के पद शिथिल और उर में विह्वलता क्यों है?

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×3=6)

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ,
जोलाहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब,
काहूकी जाति बिगार न सोऊ।।
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को,
जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।
माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो,
लैबोको एकु न दैबको दोऊ।

i. तुलसीदास ने समाज पर अपना क्षोभ किन शब्दों में व्यक्त किया है?
ii. 'काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब' के द्वारा 'तुलसी' समाज के लोगों से क्या कहना चाहते हैं?
iii. तुलसीदास राम के कैसे भक्त हैं? काव्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

8. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:**

जन्म से ही लाते हैं अपने साथ कपास-
'दिशाओं को मृदंग की बजाते हुए'
'और भी निडर हो कर सुनहले सूरज के सामने आते हैं।
'छतों को और भी नर्म बनाते हुए।'
'जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अक्सर।'

i. 'जन्म से ही लाते हैं अपने साथ कपास'-इस पंक्ति की भाषा संबंधी विशेषता लिखिए।
ii. इस पंक्ति में प्रयुक्त लाक्षणिक अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×2=4)

झुमने लगे फल,
रस अलौकिक,
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।

i. काव्यांश के भाव-सौंदर्य के बारे में बताइए।
ii. काव्यांश की भाषा पर प्रकाश डालिए।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:
   a. फूल और चिड़िया को कविता की क्या-क्या जानकारियाँ नहीं हैं? **कविता के बहाने** कविता के आधार पर बताइए।
   b. भोर के नभ को राख से लीपा, गीला चौका की संज्ञा दी गई है। क्यों? **उषा** कविता के आधार पर बताइए।
   c. रुबाइयाँ और ग़ज़ल का शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?

10. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (2×3=6)**

एक बात देखी है कि अगर तीस-चालीस मन गेहूँ उगाना है, तो किसान पाँच-छः सेर अच्छा गेहूँ अपने पास से लेकर ज़मीन में क्यारियाँ बना कर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते है। यह जो सूखे में हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते है, वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे, तो सारे शहर, कस्बे, गाँव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी। हम बीज बनाकर

पानी देते है, फिर काले मेघा से पानी माँगते है।

i. जीजी किसान के उदाहरण द्वारा क्या सिद्ध करना चाहती है?
ii. "पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना-आठ गुना करके लौटाएँगे"-वाक्य भारतीय संस्कृति की किस विशेषता का परिचायक है तथा मानव समाज के लिए किस रूप में हितकर है?
iii. एक व्यक्ति के आचरण से सबका आचरण कैसे बन जाता है? उदाहरण देकर सिद्ध कीजिए।

OR

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2x3=6)

एक- एक बार मुझे मालूम होता है कि यह शिरीष एक अद्भुत अवधूत है। दुख हो या सुख, वह हार नहीं मनाता। न ऊधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी यह हज़रत न जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं। एक वनस्पतिशास्त्री ने मुझे बताया है कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमंडल से अपना रस खींचता है। ज़रूर खींचता होगा। नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतुजाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे उगा सकता था? अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर बहुत कुछ इस शिरीष के समान ही थे, मस्त और बेपरवा, पर सरस और मादक। कालिदास भी जरूर अनासक्त योगी रहे होंगे। शिरीष के फूल फक्कड़ाना मस्ती से ही उपज सकते हैं और 'मेघदूत' का काव्य उसी प्रकार के अनासक्त अनाविल उन्मुक्त हृदय में उमड़ सकता है।

i. लेखक ने शिरीष को अवधूत क्यों कहा है?
ii. लेखक यह क्यों मानता है कि अनासक्त हृदय से ही मेघदूत जैसा श्रेष्ठ काव्य उपज सकता है?
iii. वर्तमान के संघर्षपूर्ण जीवन में शिरीष के माध्यम से लेखक क्या संकेत देना चाह रहा है?

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)
   a. कैसे लोग बाज़ार से न सच्चा लाभ उठा पाते हैं, न उसे सच्चा लाभ दे सकते हैं? वे **बाज़ारूपन** को कैसे बढ़ाते हैं?
   b. सिख बीबी के प्रति सफ़िया के आकर्षण का क्या कारण था? **नमक** पाठ के आधार पर बताइए।
   c. भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है?
   d. चार्ली की फिल्मों को मानवीय क्यों होना पड़ा?
12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:
   a. **समहाउ इंप्रापर** वाक्यांश का प्रयोग यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रांरभ में तकिया कलाम की तरह करते हैं। इस वाक्यांश का उनके व्यक्तित्व और कहानी के कथ्य से क्या संबंध बनता है?
   b. यशोधर बाबू अतीत के मूल्यों से चिपके रहना चाहते हैं किन्तु अन्य परिवारजन उन्हें आगे ले आने के लिए उत्सुक हैं। इस द्वंद्व पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
   c. **जूझ** कहानी प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच संघर्ष की कहानी है। सिद्ध कीजिए।
   d. **अतीत में दबे पाँव** के आधार पर उस युग की सभ्यता और संस्कृति के विषय में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
   e. आप अनुमान लगाइए कि मुअनजो-दड़ो में बड़े घरों में छोटे कमरे होने का क्या कारण है?

CBSE Class 12 हिंदी कोर
Sample Paper 08 (2019-20)

Solution
Section A

1.
   i. प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है- 'समाज और न्याय'।
   ii. आजकल न्यायपालिका के अमर्यादित व्यवहार के कारण उस पर उंगली उठाई जा रही है क्योंकि न्याय पालिका भी सामाजिक व्यवहार से प्रभावित है।
   iii. कुछ जज अपने आप को सामाजिक मर्यादाओं से ऊपर मान लेते हैं क्योंकि वी.आई.पी. संस्कृति के कारण वे प्रतिष्ठित एवं महत्वपूर्ण व्यक्ति होने का दिखावा करते हैं।
   iv. जजों को अधिक सतर्क रहना चाहिए क्योंकि वे कानून के रक्षक के जिम्मेदार पद पर होते हैं। दूसरों से कानून पालन करवाने का दायित्व के साथ उन्हें समाज के लिए उदहारण भी कायम करने होते हैं।
   v. नीचले स्तर पर अच्छे जज नहीं मिलते क्योंकि नीचले स्तर पर कामकाज की परिस्थितियाँ और आमदनी दोनों ही आकर्षक और मनोनुकूल नहीं होती हैं।
   vi. नेशनल लॉ इंस्टीट्यूट और अन्य प्रतिष्ठित संस्थाओं के छात्र जज बनना नहीं चाहते क्योंकि उन्हें जज बनने की अपेक्षा कॉर्पोरेट जगत में असीमित आय एवं स्वछंदता का आकर्षण होता है।
   vii. वी.आई.पी. संस्कृति की धारणा निम्न कारणों से सामाजिक अराजकता और गैर-बराबरी को बढ़ावा देती है-
      - सामाजिक प्रतिष्ठा/हैसियत को मानक मानना।
      - वी.आई.पी. संस्कृति में सामान्य नियम-कानून का पालन नहीं करने वाला व्यक्ति का महत्वपूर्ण होना।
2.
   i. जिस प्रकार बेटी अपने ससुराल से मायके आती है, तो वह पिता के घर कुछ दिन रहकर विदा होते हुए भेंट स्वरूप कुछ-न-कुछ ले जाती है। इसी संदर्भ में बाढ़ की तुलना मायके आई बेटी से की गई है।
   ii. बाढ़ के कारण बाढ़ पीड़ित व्यक्ति की झोपड़ी की दीवारें ढह गई, उसका चूल्हा बुझ गया, बर्तन-भाँडे बाढ़ की भेट चढ़ गए, चारों ओर कीचड़ भर गया और उसका मन विषादग्रस्त हो गया।
   iii. बाढ़ पीड़ित व्यक्ति को सहायता स्वरूप कुछ पैसे देने के लिए 'सर' का हाथ जेब की ओर गया होगा।
   iv. आगंतुक 'सर' के पास आया क्योंकि वह अकेलापन महसूस कर रहा था

Section B

3. **आज की बचत कल का सुख**

वर्तमान आय का वह हिस्सा, जो तत्काल व्यय (खर्च) नही किया गया और भविष्य के लिए सुरक्षित कर लिया गया 'बचत' कहलाता है। पैसा सब कुछ नहीं रहा, परंतु इसकी ज़रूरत हमेशा सबको रहती है। आज हर तरफ़ पैसों का बोलबाला है क्योंकि पैसों के बिना कुछ भी नहीं। आज ज़िंदगी और परिवार चलाने के लिए पैसे की ही अहम भूमिका होती है। आज के समय में पैसा कमाना बहुत मुश्किल है । उससे कहीं अधिक कठिन है, पैसे को अपने भविष्य के लिए सुरक्षित बचाकर

रखना, क्योंकि अनाप-शनाप खर्च और बढ़ती महँगाई के अनुपात में कमाई के स्रोतों में कमी होती जा रही है इसलिए हमारी आज की बचत ही कल हमारे भविष्य को सुखी और समृद्ध बना सकने में अहम भूमिका निभाएगी। आज के दौर में बचत नहीं करना एक मूर्खतापूर्ण निर्णय साबित होता है।

जीवन में अनेक बार ऐसे अवसर आ जाते हैं, जैसे आकस्मिक दुर्घटनाएँ हो जाती हैं, रोग या अन्य शारीरिक पीड़ाएँ घेर लेती हैं, तब हमें पैसों की बहुत आवश्यकता होती है। यदि पहले से बचत न की गई तो विपत्ति के समय हमें दूसरों के आगे हाथ फैलाने पड़ सकते हैं। कभी-कभी तो पैसों के अभाव में बहुत बड़ा अनर्थ हो जाता है और हम कुछ कर भी नहीं पाते हैं। हमारी आज की छोटी-छोटी बचत या धन निवेश ही हमें भविष्य में आने वाले तमाम खर्चे का मुफ्त समाधान कर देती है। आज की थोड़ी-सी समझदारी आने वाले भविष्य को सुखद बना सकती है। बचत करना एक अच्छी आदत है, जो हमारे वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी लाभदायक सिद्ध होती है। किसी ज़रूरत या आकस्मिक समस्या के आ जाने पर बचाया गया पैसा ही हमारे काम आता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि बचत करके हम अपने भविष्य को सँवार सकते हैं तथा आकस्मिक दुर्घटनाओं और भविष्य की मुसीबतों से बच सकते हैं।

OR

मेरे सपनों का भारत

भारत देश मुझे अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय है। मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व का अनुभव होता है। मेरा देश संसार के सभी देशों से निराला है और संसार के सब देशों से प्यारा है। मैं भारत को विश्व के शक्तिशाली देश के रूप में देखना चाहता हूँ। मैं ऐसे भारत का सपना देखता हूँ, जो भ्रष्टाचार, शोषण और हिंसा से मुक्त हो। मेरे सपनों का भारत 'सुशिक्षित भारत' है। उसमें अनपढ़ता, निरक्षरता और बेरोज़गारी का कोई स्थान नहीं है। मैं चाहता हूँ कि हमारे देश के नियोजक ऐसी शिक्षा व्यवस्था लागू करें, जिसके बाद व्यवसाय या नौकरियाँ सुरक्षित हों। कोई भी व्यक्ति अशिक्षित न हो और कोई भी शिक्षित बेरोज़गार न हो। मैं चाहता हूँ कि भारत सांप्रदायिक दंगों-झगड़ों से दूर रहे। सब में आपसी भाईचारा और प्रेम का संबंध हो। राष्ट्रीय एकता का संचार हो। जो सम्मान भारत का प्राचीन काल में था वही सम्मान, मैं पुनः उसे प्राप्त कराना चाहता हूँ। मैं फिर से रामराज्य की कल्पना करता हूँ, जिसमें सभी लोगों को जीने के समान अवसर प्राप्त हो सकें। भारत एक बार फिर 'सोने की चिड़िया' बन जाए। मेरे सपनों का भारत वह होगा, जो राजनीतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और वैज्ञानिक आदि विभिन्न दृष्टियों से उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा। भावी भारत के सपनों की पूर्णता के लिए आवश्यक है कि हमारे देश का प्रत्येक नागरिक देश की प्रत्येक कुरीति को समूल नष्ट करने का दृढ़ संकल्प करें क्योंकि देश में बदलाव लाना देश के नागरिकों पर हीं निर्भर करता है। मैं अपने सपनों के भारत को पूरी तरह से समृद्ध देखना चाहता हूँ।

OR

विज्ञापन की बढ़ती हुई लोकप्रियता

आज के युग को विज्ञापनों का युग कहा जा सकता है। आज सभी जगह विज्ञापन-ही-विज्ञापन नज़र आते हैं। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ एवं उत्पादक अपने उत्पाद एवं सेवा से संबंधित लुभावने विज्ञापन देकर उसे लोकप्रिय बनाने का हर संभव प्रयास करते हैं। किसी नए उत्पाद के विषय में जानकारी देने, उसकी विशेषता एवं प्राप्ति स्थान आदि बताने के लिए विज्ञापन की

आवश्यकता पड़ती है। इसके अतिरिक्त आज के समय में बिना विज्ञापन के उत्पादों का बिकना अत्यंत मुश्किल है। विज्ञापनों के द्वारा किसी भी सूचना तथा उत्पाद की जानकारी, पूर्व में प्रचलित किसी उत्पाद में आने वाले बदलाव आदि की जानकारी सामान्य जनता को दी जा सकती है।

विज्ञापन का उद्देश्य जनता को किसी भी उत्पाद एवं सेवा की सही सूचना देना है, लेकिन आज विज्ञापनों में अपने उत्पाद को सर्वोत्तम तथा दूसरों के उत्पादों को निकृष्ट कोटि का बताया जाता है। आजकल के विज्ञापन भ्रामक होते हैं तथा मनुष्य को अनावश्यक खरीदारी करने के लिए प्रेरित करते हैं। विज्ञापनों का यह दायित्व बनता है कि वे ग्राहकों को लुभावने दृश्य दिखाकर गुमराह नहीं करें, बल्कि अपने उत्पाद के सही गुणों से परिचित कराएँ। तभी उचित सामान ग्राहकों तक पहुँचेगा और विज्ञापन अपने लक्ष्य में सफल होगा।

4. 4/41, आज़ादपुर, दिल्ली।

17 अप्रैल, 2019

सेवा में,

संपादक,

हिंदुस्तान टाइम्स,

मथुरा रोड, दिल्ली।

विषय- आपराधिक घटनाओं को समाचार चैनल द्वारा सनसनीखेज़ बनाए जाने के संबंध में।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान आपराधिक घटनाओं को समाचार चैनलों द्वारा सनसनीखेज़ बनाए जाने तथा न्यायालय के निर्णय से पूर्व स्वयं निर्णय लेने की प्रवृत्ति की ओर आकर्षित कराना चाहती हूँ।

पत्रकारिता को भारतीय समाज में लोकतंत्र का चौथा आधार स्तंभ माना जाता है। लोकतंत्र को सुचारु रूप से चलाने में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान समय में कई बार देखा गया है कि विभिन्न समाचार चैनलों ने अपनी सनसनीखेज़ पड़ताल के द्वारा न्यायालयों के निर्णय से पूर्व ही आरोपी को अपराधी ठहरा कर जाँच की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न की है। 'आरुषि हत्याकांड' इसका उपयुक्त उदाहरण है। समाचार चैनलों की यह प्रवृत्ति जन सामान्य की भावनाओं को आंदोलित करने के साथ ही न्यायिक प्रणाली को भी प्रभावित करती है। किसी भी समाचार चैनल को कार्य केवल उस घटना से संबंधित तथ्यों से जनता को अवगत कराना होता है। किसी भी आरोपी को अपराधी घोषित करना या न करना केवल न्यायालय का कार्य होता है।

अतः मेरा आपके माध्यम से ऐसे समाचार चैनलों से अनुरोध है कि उन्हें अपनी ऐसी प्रवृत्ति को त्याग देना चाहिए। मैं आपसे निवेदन करती हूँ कि आप अपने समाचारपत्र के माध्यम से इन चैनलों के इस रवैये के खिलाफ कोई ठोस कदम उठाए।

धन्यवाद।

भवदीया

ज्योति मेहरा

OR

केंद्रीय विद्यालय, तिलक नगर
नई दिल्ली।
17 अप्रैल, 2019
प्रबंधक काष्ठागार, आमेर सरणि
जयपुर, राजस्थान।
विषय- विद्यालय के फर्नीचर की आपूर्ति हेतु।
महोदय,
मैं तिलक नगर के केंद्रीय विद्यालय का प्राचार्य हूँ। पिछले माह आपसे विद्यालय हेतु फर्नीचर की माँग की गई थी। फर्नीचर भेजते हुए आपने संविदा में उल्लिखित समझौते के अनुसार आपूर्ति नहीं की। आपके द्वारा समझौते के जिन बिंदुओं का उल्लंघन किया गया है, नीचे उनका उल्लेख किया जा रहा है।

i. फर्निचर की संख्या में कमी की गई है।
ii. फर्नीचर टूटी-फूटी अवस्था में हैं।
iii. माँग के अनुसार फर्नीचर की पूर्ति नहीं की गई है।

हम आपसे आशा करते हैं कि आप फर्नीचर में विद्यमान त्रुटियों पर ध्यान दें तथा शीघ्र-अतिशीघ्र उपरोक्त बिंदुओं के अनुसार तथा सही गिनती में फर्नीचर भेजें। अन्यथा आपके विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी।
प्राचार्य
क. ख. ग.

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:

a. किसी विशेष क्षेत्र जैसे-कृषि, विज्ञान, तकनीकी, व्यापार आदि की तह में जाकर उसका अर्थ स्पष्ट करना तथा मुद्दों और समस्याओं का सूक्ष्म विश्लेषण करके आम पाठक को उसका महत्व बताना। ये सब विशेषीकृत पत्रकारिता के अंतर्गत आते हैं।

b. एक पत्रकार द्वारा गुप्त कैमरे के माध्यम से गैरकानूनी, असामाजिक और आपत्तिजनक व्यक्तियों और गतिविधियों को प्रकाश में लाना स्टिंग ऑपरेशन कहलाता है।

c. **लोकतंत्र में जनसंचार के दो कार्य निम्नलिखित हैं-**

1. **सूचित करना -** जनसंचार के प्रमुख कार्यों में से एक है जनता को देश -दुनिया की तमाम घटनाओं से अवगत कराना और तमाम समाचारों और को लोगों को सूचित करना।
2. **शिक्षित करना -** आम जनता को अनेक प्रकारों से शिक्षित करना भी जनसंचार का एक महत्वपूर्ण कार्य है । इसके अलावा लोगों को सही और गलत के बारे में बताना भी एक महत्वपूर्ण कार्य है।

d. रेडियो समाचार केवल सुने जा सकते हैं, जबकि टी.वी. समाचारों का प्रभाव सुनकर और देखकर ग्रहण किया जा

सकता है। प्रत्यक्ष दृश्यों के कारण ये अधिक प्रमाणिक एवं प्रभावी होते हैं।

e. मुद्रित माध्यम की दो विशेषताएँ हैं -

- अपनी गति, समय एवं स्थान के अनुसार पढ़ने की सुविधा
- विश्वसनीयता

6. **मेक इन इंडिया**

मेक इन इंडिया सोच, जो अब एक मिशन है, का अर्थ है- हमारी आवश्यकताओं से संबद्ध अधिकाधिक वस्तुओं का निर्माण भारत में किया जाना। दूसरे शब्दों में कहें, तो 'मेक इन इंडिया' मिशन 'मेड इन इंडिया' के स्वर्णिम स्वप्न को पूर्ण करने का मिशन है। 'मेड इन इंडिया' उन्हीं वस्तुओं पर अंकित किया जाता है, जिनका निर्माण हमारे देश में किया गया हो और जिन वस्तुओं का निर्माण देश में किया जाता है, उनकी कीमत अपेक्षाकृत कम रहती है। इस प्रकार इस दूरदर्शी अभियान का सबसे अधिक लाभ देशवासियों को ही होगा। चूँकि इस योजना के अंतर्गत तमाम वस्तुओं का निर्माण अपने देश में किया जाएगा, उत्पादों की कीमत तो कम होगी ही, साथ ही अनेक नागरिकों को रोजगार भी मिलेगाअर्थात इस योजना से एक नहीं कई फायदे हैं।
प्रधानमंत्री ने 25 सितंबर, 2014 को नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में 'मेक इन इंडिया' मिशन का शुभारंभ करते हुए कहा था-"हम नहीं चाहते कि किसी भी उद्योग को भारत छोड़कर जाने के लिए मजबूर होना पड़े। हम चाहते हैं कि हमारी कंपनियाँ बहुराष्ट्रीय कंपनियों की तरह चमके।" इस अवसर पर उन्होंने निवेशकों को यह आश्वस्त करते हुए कि सरकार उनका पैसा डूबने नही देगी, इस महत्त्वाकांक्षी मिशन को 'शेर के कदम' जैसा बतलाया था। इस मिशन का लोगो भी अत्याधुनिक तकनीक संपन्न 'शेर' रखा गया है। वास्तव में, इस अभियान का उद्देश्य विदेशी निवेश को देश में बढ़ावा देने के साथ-साथ सुस्त पड़े उद्योग-धंधों को पटरी पर लाना है, ताकि विनिर्माण के क्षेत्र में हमारा देश वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना सके। उदारीकरण की नीति अपनाकर विश्व व्यापार को नए आयाम प्रदान करने वाले इस भारतीय अभियान के अंतर्गत कागज़, बिजली, मोटर वाहन, पनडुब्बी, उपग्रह, सॉफ्टवेयर जैसे क्षेत्रों में विनिर्माण को विश्वस्तरीय बनाने पर जोर दिया गया है। श्री नरेंद्र मोदी के शब्दों में "उद्योगपतियों, शिक्षाविदों और नौजवानों की सोच में एकरूपता लाने की आवश्यकता है। ऐसी आशा की जाती है कि आने वाले समय में इस अभियान से देशवासियों को हर स्तर पर लाभ मिलेगा और 'मेक इन इंडिया' अभियान स्तर पर अपनी पहचान बनाने में सफलता हासिल करेगा।

OR

केदारनाथ में जल प्रलय

प्राकृतिक आपदा कब और कैसे आ जाए, इस विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता है। केदारनाथ में भी जलप्रलय के दौरान कुछ ऐसा ही हुआ था। 16 जून, 2013 को केदारनाथ में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति सुबह से ही डरा हुआ था। बरसात पिछले 3 दिन से रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। उस दिन केदारनाथ में भयावह जल प्रलय हुआ। इस भयंकर त्रासदी में उत्तराखंड के लाखों लोगों ने भगवान शिव के तांडव नृत्य को देखा।

16 जून रात्रि तथा 17 जून, प्रातः काल नदी की विराट लहरों ने केदार घाटी को निगल लिया। सैंकड़ों स्थानों पर भूस्खलन हुआ और देखते-देखते असंख्य लोग उसकी चपेट में आकर मृत्यु को प्राप्त हो गए। तत्कालीन मुख्यमंत्री के अनुसार, इस त्रासदी में तीन-चार हज़ार लोगों की मृत्यु हुई, जबकि प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, 20 हज़ार से अधिक लोगों को मृत्यु के गह्वर मे समाने को विवश होना पड़ा।

इस घटना से तीन दिन पूर्व लगातार वर्षा होती रही तथा 16 जून की रात्रि को बादल फटने से वासुकि ताल से एक विशाल और विकराल जलधारा प्रकट हुई। पंद्रह बीस मिनट में ही हजारों लोग काल-कवलित हो गए।

मंदाकिनी नदी के तीव्र प्रवाह ने रामबाड़ा जंगल चट्टी तथा गौरी कुंड आदि स्थानों की रेखा ही परिवर्तित कर दी। रुद्र प्रयाग में भी विनाश के भयानक दृश्य दिखाई दिए। यहाँ के जंगलों में हज़ारों लोगों को चार-पाँच दिन तक भोजन तथा जल नहीं मिला।

भारतीय सेना तथा आई.टी.बी.टी. के जवानों ने लगभग एक लाख लोगों को दुर्गम स्थानों से सुरक्षित बाहर निकाला। इस महाविनाश में 1,307 सड़कें क्षतिग्रस्त हुईं तथा 147 पुल पूरी तरह टूट गए। वस्तुतः विकास के नाम पर प्रकृति से इतनी छेड़छाड़ की गई थी कि यह विनाश होना स्वाभाविक ही था। हमारे प्रशासकों को पहाड़ी क्षेत्रों में ऐसा विकास नहीं करना चाहिए, जो कुछ समय पश्चात् महाविनाश में बदल जाए।

OR

इंट्रो समाचार का प्रारम्भिक एवं महत्त्वपूर्ण भाग होता है, जिसमें समाचार का समस्त सूचनात्मक भाग निहित होता है। इंट्रो के बाद का भाग तो मात्र विस्तार के लिए ही होता है। अत: इण्ट्रो प्रभावोत्पादक होना चाहिए व क्या, कब, कौन, कहाँ के समस्त तथ्यों का समावेश इसमें होना चाहिए। भाषा सहज परन्तु प्रभावशाली होनी चाहिए।

Section C

7. i. चिड़िया के भूखे बच्चे दाना खाने के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं और दिन तेजी से ढलता जा रहा है। यही चिंता चिड़िया के पंखों में चंचलता भर देती है।
   ii. कविता में तुक एवं गेयता का प्रभाव है। 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' यह आवृत्ति समय की परिवर्तनशीलता और उसके शीघ्रता से बीतने का प्रतीक है।
   iii. घर में प्रतीक्षा करने वाले किसी प्रियजन के न होने और अकेलेपन के अनुभव के कारण कवि के पद शिथिल और हृदय व्याकुल है।

OR

i. तुलसीदास ने समाज के प्रति अपना क्षोभ व्यक्त करते हुए कहा है कि चाहे कोई मुझे धूर्त कहे, अवधूत योगी कहे, राजपूत या जुलाहा कहे अर्थात किसी भी वर्ग या जाति से जोड़कर देखे, मुझे उसकी कोई फिक्र नहीं है क्योंकि न तो मुझे किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह करना है और न ही उसकी जाति-बिरादरी में शामिल होकर उसे बिगाड़ना है। वास्तव में, तुलसीदास यहाँ जाति-पाँति पर आधारित सामाजिक व्यवस्था के पोषकों पर गहरा व्यंग्य करते हैं।
ii. तुलसीदास उपर्युक्त कथन के माध्यम से बताना चाहते हैं कि वे संत हैं, जिसकी कोई समाज निर्मित जाति नहीं होती।

उनकी जाति और धर्म केवल मनुष्य एवं मनुष्यता है। जाति की शुद्धता की बात करने वाले परंपरा के ठेकेदारों पर, जिन्होंने समाज को इन संकीर्णताओ के आधार पर बाँट रखा है, यह एक तल्ख टिप्पणी है।

iii. तुलसीदास राम के अनन्य भक्त हैं, वे स्वयं को राम का गुलाम अर्थात् दास बताते हैं और कहते है कि मेरी प्रसिद्धि राम के गुलाम या दास के रूप में ही इस संसार में है। मुझे और किसी से कुछ भी लेना-देना नहीं है। जिसे जो समझ में आए, वह कहे।

8. i. इस पंक्ति में सहज, सरल खड़ी बोली के प्रयोग के साथ, नए प्रतीक के रूप में कपास की कोमलता का कुशलता पूर्वक प्रयोग किया है।

ii. 'दिशाओं को मृदंग की बजाते हुए' - इस पंक्ति में कवि ने लाक्षणिकता का प्रयोग करते हुये संगीतमय वातावरण की सृष्टि की है।

OR

i. प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने कविता अथवा समग्र रूप से साहित्य को अलौकिक बताते हुए उसे अमृत के समान एवं अनंतकाल तक स्थायी बना रहने वाला बताया है। साहित्य रस का अक्षयपात्र है और कविता उसकी सर्वाधिक हृदयग्राही अंतर्वस्तु। प्रत्येक साहित्यिक कृति या रचना अपने प्रभाव से उसका आस्वाद करने वाले को आनंदित एवं जीवन रस से सिक्त करती रहती है, फिर भी उसका महत्त्व घटता नहीं, अपितु समय के साथ नए भाव एवं अर्थ को ग्रहण करती हुई वह आने वाले समय के संदर्भ में भी मूल्यवान एवं प्रासंगिक बनी रहती है।

ii. काव्यांश की भाषा संस्कृतनिष्ठ भाषा है। यह सहज, सरल एवं बोधगम्य है, लेकिन साथ ही विचार-प्रधान भी है। कवि ने खेती और कृति की रचना में साम्यता स्पष्ट करने के लिए प्रतीकों का सहारा लिया है। कविता मुक्त छंद की है एवं अतुकांत है साथ ही साथ अर्थ-लय का सौंदर्य निहित है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:

a. फूल और चिड़िया को कविता की निम्नलिखित जानकारियाँ नहीं हैं-

i. फूल को कविता के खिलने का पता नहीं है। फूल एक समयावधि में मुरझा जाते हैं, परंतु कविता के भाव बिना खिले ही सदा खुशबू बिखेरते रहते हैं। उसकी खुशबू का क्षेत्र असीमित होता है।

ii. चिड़िया को कविता की उड़ान का पता नहीं है। कविता में जन-कल्याण की उड़ान है जो चिड़िया की उड़ान से व्यापक है।कविता बिना पंखों के चिरकाल तक उड़ती रहती है और लोगों के मन मस्तिष्क पर अमिट प्रभाव डालती है।

b. कवि कहता है कि भोर के समय ओस के कारण आकाश नमी युक्त व धुँधला होता है। राख से लिपा हुआ चौका भी मटमैला रंग का होता है। दोनों का रंग लगभग एक जैसा होने के कारण कवि ने भोर के नभ को राख से लीपा गीला चौका की संज्ञा दी है। दूसरे, चौके को लीपे जाने से वह स्वच्छ हो जाता है। इसी तरह भोर का नभ भी पवित्र होता है।

c. शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह मानता है। एक नन्हीं-सी बच्ची अपने भाई के हाथों पर राखी

बाँधती है। वह बच्ची रस की पुतली है, उसकी उमंग और चपलता देखते बनती है। उसके हाथ मे जो राखी है, उसके लच्छे से एक चमक निकल रही है, जो आकाश में चमकती बिजली की भंगिमा दे जाती है। दूसरी ओर कवि रक्षाबंधन के दिन आसमान में काले-काले बादलों की छटा को दर्शाता है।

10. i. जीजी किसान के इस उदाहरण द्वारा यह सिद्ध करना चाहती है कि जैसे बिना बीज बोए खेती नहीं होती। उसी प्रकार यदि हम चाहते है कि वर्षा हो, तो पहले हमे इंदर सेना को कुछ जल समर्पित करना होगा।
    ii. "पहले खुद दो तब देवता तुम्हे चौगुना-आठ गुना करके लौटाएँगे" वाक्य भारतीय संस्कृति की इस विशेषता का परिचायक है कि यहाँ लोग दान को धर्म का एक आवश्यक अंग मानते हैं। समाज में अनेक लोग अपाहिज तथा दरिद्र होते हैं। दान द्वारा ऐसे लोगों को सहायता मिल जाती है। इससे लाखो साधु-संत भी सहज रूप से जीवन-यापन करने में समर्थ होते हैं।
    iii. जब समाज में लोग दान-धर्म युक्त आचरण करते हैं, तो उससे प्रेरित होकर अन्य भी अच्छा आचरण करते है। इस प्रकार अकाल, भूकंप आदि विषम परिस्थतियों में वे पीड़ितों की सहायता के लिए अग्रसर हो जाते है।

OR

i. सुख-दुःख में संन्यासी की तरह निर्विकार; उस पर किसी काल का असर नहीं, वाह्य परिस्थितियों का असर नहीं, आठों पहर मस्त रहना।
ii. अनासक्त हृदय जो विभिन्न स्थितियों में अविचल रहता है वही जीवन के यथार्थ का सम्यक चित्रण कर श्रेष्ठ काव्य की रचना में समर्थ।
iii. वर्तमान संघर्षों में अविचलित रहकर, जिजीविषा बनाए रखकर शिरीष के जैसे किसी से हार नहीं मानना और फक्कड़ाना मस्ती से जीना।

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)

    a. लेखक कहता है कि समाज में कुछ लोग क्रय-शक्ति के बल में बाज़ार से वस्तुएँ खरीदते हैं, पंरतु उन्हें अपनी ज़रूरत का पता नहीं होता। ऐसे लोग बाज़ार से न सच्चा लाभ उठा पाते हैं, न उसे सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे धन के बल पर बाज़ार में कपट को बढ़ावा देते हैं। वे समाज में असंतोष बढ़ाते हैं। सामान्य लोगों के सामने अपनी क्रय-शक्ति का प्रदर्शन करते हैं। वे शान के लिए उत्पाद खरीदते हैं। इस परकार से वे बाज़ारूपन को बढ़ाते हैं।

    b. जब सफ़िया ने सिख बीबी को देखा, तो वह हैरान रह गई। बीबी का चेहरा उस की माँ जैसा था। बिलकुल वही कद, वही भारी शरीर, वही छोटी-छोटी चमकदार आँखें, जिनमें नेकी, मुहब्बत और रहमदिली की रोशनी जगमगा रही थी। चेहरा खुली किताब जैसा था। बीबी ने वैसी ही सफ़ेद मलमल का दुपट्टा ओढ़ रखा था, जैसा सफ़िया की अम्मा मुहर्रम में ओढ़ा करती थीं, इसीलिए सफ़िया बीबी की तरफ बार-बार बड़े प्यार से देखने लगी उसकी माँ तो बरसों पहले मर चुकी थीं, उसकी माँ जैसा कौन हैं, इतनी समानता कैसे है? यही सोचकर सफ़िया उनके प्रति आकर्षित हुई।

    c. लेखिका को भक्तिन का सिर मुंडवाना पसंद नहीं था। लेखिका उसे ऐसा करने के लिए हमेशा मना करती थी परन्तु

भक्तिन केश मुँडाने से मना किए जाने पर शास्त्रों का हवाला देते हुए कहती है 'तीरथ गए मुँडाए सिद्ध'। यह बात किस शास्त्र में लिखी है इसका भक्तिन को कोई ज्ञान नहीं था जबकि लेखिका को पता था कि यह उक्ति शास्त्र की न होकर किसी व्यक्ति द्वारा कही गई है परन्तु तर्क देने में पटु भक्तिन की सिर मुंडवाने की आदत को लेखिका बदल नहीं पाई।

d. चार्ली की फ़िल्मों में भाषा का प्रयोग नहीं किया गया। अतः उनमें मानव की क्रियाओं को सहजता व स्वाभाविकता से दिखाया गया ताकि दर्शक उन्हें शीघ्र समझ सकें इसीलिए चार्ली की फ़िल्मों को मानवीय होना पड़ा।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:

a. यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रारंभ में 'समहाउ इंप्रापर' शब्द का उपयोग तकिया कलाम की तरह करते हैं। उन्हें जो अनुचित लगता है, तब अचानक यह वाक्य कहते हैं।
पाठ में 'समहाउ इंप्रापर' वाक्यांश का प्रयोग निम्नलिखित संदर्भो में हुआ है-

- दफ़्तर में सिल्वर वैडिंग की पार्टी देने की मांग पर
- साधारण पुत्र को असाधारण वेतन मिलने पर
- स्कूटर की सवारी पर
- पत्नी एवं पुत्री के पहनावे पर
- डीडीए फ्लैट का पैसा न भरने पर
- खुशहाली में रिश्तेदारों की उपेक्षा करने पर
- छोटे साले के ओछेपन पर
- केक काटने की विदेशी परंपरा पर आदि

इन सन्दर्भों से यह स्पष्ट हो जाता है कि यशोधर बाबू सिद्धांतवादी हैं। यशोधर बाबू आधुनिक परिवेश में बदलते हुए जीवन-मूल्यों और संस्कारों के विरूद्ध हैं। वे उन्हें अपनाना नहीं चाहते, इसी आदत के कारण प्रायः परिवार से उनका मनमुटाव बना रहता है और असहजता एवं अस्वाभाविक स्थिति में यह वाक्यांश उनके मुँह से निकल पड़ता है।

b. यशोधर बाबू अतीत के मूल्यों से चिपके रहना चाहते हैं किन्तु अन्य परिवारजन उन्हें आगे ले आने के लिए उत्सुक हैं। यह तथ्य निम्नलिखित घटनाओं से स्पष्ट हो जाता है-

- यशोधर बाबू के न चाहने पर भी बच्चों द्वारा सिल्वर वैडिंग मनाना।
- सरकारी नौकरी पर अधिक बल देने के बावजूद बच्चों का प्राइवेट नौकरी करना।
- बेटी के विवाह की इच्छा परंतु उसका आगे पढ़ना।
- सेवानिवृत्ति पर गाँव वापसी किंतु बच्चों का दिल्ली की सुख-सुविधाओं को न त्यागना।
- दिखावे की प्रवृत्ति का विरोध, बच्चों को दिखावा पसंद आदि।

c. यह कहानी एक किशोर की स्वयं के जीवन के यथार्थ एवं मार्मिक गाथा है। इस कहानी में एक किशोर को पिता के तानाशाही एवं नासमझ रवैये के कारण खेती में लगना पड़ा था। उसका मन पाठशाला के लिए तड़पता था। वह

परिस्थितियों से जूझता है। यह एक किशोर को देखे और भोगे गए ग्राम्य जीवन के खुरदरे यथार्थ और परिवेश को विश्वसनीय ढंग से प्रतिबिंबित भी करता है। कथानायक शिक्षा प्राप्त करने के लिए कई स्तर पर जूझता है। पहले वह घर में संघर्ष करता है, इसके बाद स्कूल में भी उसे पढ़ाई के लिए जूझना पड़ता है। आर्थिक संकट से भी उसे परेशानी उठानी पड़ती है। इन सब संघर्षों के बावजूद वह अपनी पढ़ाई जारी रखता है। वह कविता पाठ करने लगा। गणित में भी वह अव्वल हो गया। इस कारण सभी उसे आनंद कहने लगे थे। लेखक ने आत्मकथा में अपने जीवन संघर्ष को ही व्यक्त किया है। यह कहानी प्रतिकूल परिस्थितियों में संघर्ष की कहानी है। कथानायक को अंत में अपने संघर्ष में सफलता मिलती है।

d. सिंधु घाटी की सभ्यता बहुत ही सुंदर और विकसित थी। यह नगर बहुत ही व्यवस्थित तरीके से बसाया गया था। यहाँ पर पानी की निकासी के उचित प्रबध थे। उन्होंने धातु और पत्थर की मूर्तियां, मृद्भांड, मुहरें, आभूषण, लिपि आदि को विकसित किया था। यहाँ नर्तकी और दाढ़ी वाले नरेश की मूर्ति भी पाई गई है। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि यह एक अत्यंत विकसित और कलासिद्ध सभ्यता थी जो भव्यता एवं दिखावे के आडम्बर से दूर थी।

e. मुअनजो-दड़ो के घर बड़े हैं और घरों में मंजिलें भी हैं। ऊपर की मंजिलों पर बड़े कमरे हैं। संभवतः वहाँ घर के मालिक ही रहते होंगे। घर की निचली मंजिलों के कमरे बहुत छोटे हैं। ऊपर बने कमरों जैसी सुख-सुविधाएँ इन कमरों में हो ही नहीं सकती थी। इन कमरों के आधार पर ग्रेगरी पोसेल का अनुमान है कि निचली मंजिलों के कमरों में नौकर-चाकर रहते होंगे या किरायेदारों को रखने का प्रचलन भी हो सकता है। इस प्रकार अनुमान लगाया जा सकता है कि बड़े घरों में छोटे कमरे उन्होंने अपनी व्यवस्था के अनुसार बनाए होंगे।